सम्पादकीय

देश | विदेश

राष्ट्रीय

हरियाणा वाला जादू यूपी में चल गया तो अखिलेश यादव के लिये आगे की सियासी राह मुश्किल होगी...

भारतीय जनता पार्टी के नेता और खासकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आजकल समाजवादी पार्टी को हिंदुत्व के नाम पर तो घेर ही रहे हैं इसके अलावा अखिलेश राज में फैली अराजकता, जंगलराज, उनके कार्यकाल में हुए दंगों की भी याद जनता को दिला रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि अखिलेश को चौतरफा घेरने की तैयारी चल रही है।हरियाणा वाला जादू यूपी में चल गया तो सपा प्रमुख अखिलेश यादव के लिये आगे की सियासी राह मुश्किल हो जायेगी। उप चुनाव में बीजेपी और योगी की यह रणनीति सफल रही तो इसका उप चुनाव में तो पार्टी को फायदा होगा ही 2027 में होने वाले यूपी विधान सभा चुनाव के लिये भी इसे आगे बढ़ाया जा सकता है। दरअसल, योगी और अन्य बीजेपी के नेता उप चुनाव को 2027 के चुनाव का रिहर्सल मानकर चल रहे हैं, उप चुनाव के नतीजे बीजेपी के पक्ष में आते हैं तो लोकसभा चुनाव से उत्साहित अखिलेश बैकफुट पर आ सकते हैं। उधर, बीजेपी का लोकसभा चुनाव के नतीजों का गम भी कपूरी कस हो जायेगा। इसी बात को ध्यान में रखकर योगी सभाओं रैलियों में लगातार सपा सरकार के समय के गुंडाराज, समाजवादी पार्टी के नेतृत्व व नेताओं की आपराधिक की परतें उधेड़ रहे हैं। यह अंबेडकरनगर की कटेहरी, मीरजापुर की मझवां और प्रयागराज की फूलपुर या अन्य विधानसभा सीटों के उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशियों के समर्थन में आयोजित सभा में समाजवादी पार्टी को जहां अपराधी, दुष्कर्मी, माफिया का प्रोडक्शन हाउस बता रहे हैं, वहीं सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव को इसका सौईओ और पार्टी महासचिव शिवपाल यादव को ट्रेनर करार दे रहे हैं।

सपा के पीडीए के नारे को अपने हिसाब से व्याख्या करते हुए योगी पीडीए का अर्थ है 'प्रोडक्शन हाउस ऑफ दंगाई एंड अपराधी' बताते हैं। वह कहते हैं कि अतीक अहमद, मुख्तार अंसारी, खान गुलाम सपा के इसी प्रोडक्शन हाउस की उपज थे। इसी के साथ योगी बार-बार यह दिलाते हैं कि बंटेंगे तो कटेंगे और एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे, इसलिए एकजुट रहिए।भाजपा प्रत्याशी धर्मराज निषाद के समर्थन में आयोजित सभा में मुख्यमंत्री ने यहां तक कहा कि कांग्रेस-सपा वाले महापुरुषों का सम्मान नहीं करते हैं। एक साल पहले भाजपा 31 अक्टूबर को सब राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में वल्लभ भाई पटेल की जयंती मना रही थी तो सपा और उसके मुखिया भारत विभाजन के जिम्मेदार जिन्ना की जयंती मना रहे थे। इन्हें जिन्ना प्यारा है, क्योंकि उसने भारत का विभाजन कराया था। योगी बताते हैं कि एसमी-एसटी पर सर्वाधिक अत्याचार सपा शासन के दौरान हुए। 2015-16 में इन लोगों ने एसमी-एसटी के बच्चों की छात्रवृत्ति रोक दी थी, उसे भी हमने शुरू कराया। कांग्रेस व सपा का ईडी गठबंधन देश व समाज के लिए खतरनाक है, इसलिए हरियाणा में जनता ने उन्हें नहीं आने दिया और भाजपा की हैट्रिक लगाई। प्रयागराज के फूलपुर में भाजपा प्रत्याशी दीपक व मिर्जापुर के मझवां में शुचिस्मिता के समर्थन में आयोजित सभा में सपा को सीधे निशाने पर लिया। योगी की इसी मुखरता के कारण चुनाव प्रचार में सपा के स्टार प्रचारक व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मांग लगातार बढ़ रही है। उत्तर प्रदेश में विधानसभा उपचुनाव में लगातार तीन दिनों तक नौ रैलियां करने के बाद योगी झारखंड के एक दिवसीय दौरे पर रहेंगे। योगी झारखंड में चार रैलियां कर भाजपा के चुनाव प्रचार को धार देंगे। इससे पहले पांच नवंबर को भी उन्होंने झारखंड में कई रैलियां कर भाजपा के उम्मीदवारों का प्रचार किया था। मुख्यमंत्री की पहली जनसभा भवनाथपुर विधानसभा क्षेत्र में होगी। भारतीय जनता पार्टी ने यहां से मनु प्रताप शाही को उम्मीदवार बनाया है। वहीं भाजपा ने इसके बाद पलामू जिले की हुसैनाबाद सीट से उम्मीदवार कमलेश कुमार सिंह के लिए वोट मांगेंगे। उनकी तीसरी व चौथी रैली भी पलामू में ही होगी। तीसरी रैली पांकी से शशिभूषण मेहता के लिए करेंगे। वहीं चैथी व आखिरी रैली डालटनगंज विधानसभा क्षेत्र में होगी। यहां से भाजपा ने आलोक कुमार चौरसिया को उम्मीदवार बनाया है। योगी जहां भी चुनाव प्रचार के लिए जा रहे हैं वहां पर अपनी तेज-तर्रार शैली की छाप भी छोड़ रहे हैं। यही वजह है कि हर चुनाव में प्रचार के लिए पार्टी में उनकी मांग लगातार बढ़ रही है।

अंतर्राष्ट्रीय

सऊदी अरब में जुटे 57 मुस्लिम देश, इजरायल से निपटने का बनाया प्लान, लेकिन...

सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने रियाद में अरब और मुस्लिम नेताओं के शिखर सम्मेलन के उद्घाटन पर मांग की है कि इजरायल गाजा और लेबनान में अपने हमले को तुरंत रोके। 11 नवम्बर को संयुक्त अरब लीग और इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के शिखर सम्मेलन से पहले क्राउन प्रिंस ने फिलिस्तीनी और लेबनानी लोगों के खिलाफ किए गए नरसंहार की निंदा की। उन्होंने इजरायल से आक्रामकता के किसी भी और काम से बचने की अपील किया और दुनिया भर के देशों से फिलिस्तीनी राज्य को मान्यता देने की अपील किया। अरब लीग के महासचिव अहमद अबुल घीत ने भी गाजा और लेबनान में इजरायल के सैन्य अभियान की निंदा करने में सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस का साथ दिया और कहा कि फिलिस्तीनी लोगों की दुर्दशा को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। अबुल घीत ने कहा कि फिलिस्तीनी लोगों के खिलाफ इजरायल द्वारा की गई कार्रवाई स्थायी शांति हासिल करने के प्रयासों को कमजोर कर रही है। केवल न्याय के साथ ही हम स्थायी शांति स्थापित कर पाएंगे। जबकि इराकी प्रधानमंत्री ने कहा कि युद्ध को रोकने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की विफलता के कारण इसका विस्तार लेबनान में हो गया है। वहीं कुवैत के क्राउन प्रिंस ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को लेबनान के साथ एकजुटता से खड़ा होना चाहिए और उसे अपने क्षेत्र पर नियंत्रण हासिल करने में सक्षम बनाना चाहिए। हमास और हिज्बुल्लाह का खुला समर्थन करने वाले ईरानी की संसद के अध्यक्ष ने कहा कि हम लेबनान के लिए ईरान के समर्थन और संयुक्त राष्ट्र 1701 प्रस्ताव को लागू करने में उसकी सहायता की पुष्टि करते हैं।

बहरीन ने लेबनान में तनाव को समाप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र 1701 प्रस्ताव को लागू करने की अपील किया। रियाद में शिखर सम्मेलन के समापन पर सऊदी अरब के विदेश मंत्री ने कहा कि हमारा प्राथमिक मिशन गाजा में युद्ध को रोकना है। हमें अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को इजरायल के अपराधों को अनदेखा करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

शिखर सम्मेलन ने तुर्की के राष्ट्रपति रेचेप तैय्यप एर्दोगन ने गाजा में चल रहे 'नरसंहार' के मुद्दे पर मुस्लिम देशों की ओर से प्रतिक्रिया की कमी की आलोचना की और आरोप लगाया कि कुछ पश्चिमी देश पूरी तरह से इजरायल का समर्थन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुस्लिम देशों की विफलता के कारण जमीन पर आज वे हालात बने हैं। संयुक्त शिखर सम्मेलन में एर्दोगन ने कहा, 'कुछ पश्चिमी देशों ने इजरायल को सभी प्रकार के सैन्य, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक समर्थन दिया है, जबकि मुस्लिम देशों ने इसका सही से जवाब नहीं दिया है और इसी विफलता के कारण जमीन पर यह स्थिति है।' उन्होंने जोर देकर कहा, 'इजरायल का लक्ष्य गाजा में बसना, पूर्वी यरुशलम समेत पश्चिमी तट से फिलिस्तीनियों को हटाना और अंततः इस क्षेत्र को अपने में मिलाना है। इस लक्ष्य की ओर धीरे-धीरे इजरायल आगे बढ़ रहा है और हमें इसे रोकना चाहिए।'पिछले एक साल से इजरायल और हमास व उसके साथी संगठनों के बीच युद्ध लगातार जारी है। दोनों पक्ष एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने के लिए किसी भी एक मौके को खाली नहीं जाने दे रहे हैं।

सर्वस्व

धर्म-आध्यात्म

भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुर्मांहिसि ॐ ह्रीं बं बटुकाय मम आपत्ति उद्धारणाय।

कालाष्टमी के दिन भोलेबाबा भैरव रूप में प्रकट हुए थे और ब्रह्मा जी का पांचवा शीश काट दिया था

कालाष्टमी प्रति माह कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि के दौरान मनाई जाती है। यह दिन भैरवबाबा की पूजा के लिए समर्पित है। कालाष्टमी हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पर्व है। सबसे महत्वपूर्ण कालाष्टमी जिसे कालभैरव जयंती के नाम से भी जाना जाता है यह मार्गशीर्ष महीने में आती है। ऐसा कहा जाता है कि इसी दिन भोलेबाबा भैरव रूप में प्रकट हुए थे। यह शुभ दिन पूरे देश में भैरवनाथ के भक्तों द्वारा मनाया जाता है।

भगवान काल भैरव मंत्र

ॐ ब्रह्म काल भैरवाय फट
ॐ तीखदन्त महाकाय कल्पान्तदोहन।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुर्मांहिसि
ॐ ह्रीं बं बटुकाय मम आपत्ति उद्धारणाय।
कुरु कुरु बटुकाय बं ह्रीं ॐ फट स्वाहा।

कालाष्टमी का धार्मिक महत्व

प्रचलित कथाओं के अनुसार, ऐसी भी मान्यता है कि त्रिदेव- ब्रह्मा, विष्णु और महेश के बीच एक बार बहस हो गई थी, जिसमें ब्रह्मा जी की एक टिप्पणी पर भगवान शिव अत्यधिक क्रोधित हो गए और उन्होंने ब्रह्मा जी का पांचवा शीश काट दिया। तभी से भगवान शिव के इस रूप को 'काल भैरव' के रूप में पूजा जाता है। इस कथा को हर साधक प्रति कालाष्टमी के दिन पढ़ता और सुनता है।

कालाष्टमी के दिन भगवान भैरवनाथ की पूजा करने से सभी प्रकार की मुश्किलों और नकारात्मकता का अंत होता है। ऐसे में हर किसी को इस विशेष दिन पर भक्ति भाव के साथ पूजा-अर्चना करनी चाहिए।

कालाष्टमी के दिन ये सब काम करने से जीवन में आ सकती हैं परेशानियां!

कालाष्टमी के दिन कुछ काम को भूलकर भी नहीं करना चाहिए, मान्यता है ऐसा करने से काल भैरव हो जाते हैं नाराज हैं कि कालाष्टमी वाले दिन किसी भी जीव जंतु को नहीं सताना नहीं चाहिए। जीव जंतु को सताने वाले इंसान से देवी देवता कभी भी प्रसन्न नहीं होते हैं इसलिए सभी जीवों के साथ प्रेम से रहे। कालाष्टमी के दिन शुद्ध और सात्विक रहें। किसी भी प्रकार के मांसाहारी भोजन या शराब का सेवन न करें। कालाष्टमी के दिन काल भैरव की तामसिक पूजा भूलकर भी नहीं करनी चाहिए। ज्योतिषाचार्य बताते हैं कि मन पूरी तरह से शुद्ध रखें। किसी का अमंगल करने की कामना को भूलकर भी मन में न आने दें। जो दूसरे के लिए बुरा सोचता है उसका कभी मंगल नही हो सकता इसलिए काल भैरव की पूजा किसी का अमंगल करने के लिए कदापि न करें। कालाष्टमी वाले दिन किसी का भी अनादर न करें। सबके साथ प्यार और सम्मान से बात करें। साथ ही माना जाता है कालाष्टमी के दिन किचन में झाड़ू का प्रयोग नहीं करना चाहिए और खाने के बाद बर्तनों में हाथ नहीं धोने चाहिए। कालाष्टमी के दिन किसी के साथ अपशब्द न बोलें। इस दिन भूलकर भी किसी से झूठ नहीं बोलना चाहिए और न ही किसी की बुराई किसी दूसरे से करनी चाहिए।

आध्यात्मिक लेख

: जिस व्यक्ति की कुंडली में मंगल दोष हो उसे भौम प्रदोष का व्रत जरूर रखना चाहिए। मान्यता है कि भौम प्रदोष व्रत के दिन भगवान हनुमान को घी की बाती वाला दीपक जलाने से हर तरह के कर्ज से मुक्ति मिलती है। ये व्रत रखने वालों की सारी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस दिन व्रत और पूजा-पाठ करने से सारे कष्ट मिट जाते हैं और शिव-हनुमान की विशेष कृपा होती है।

जिस व्यक्ति की कुंडली में मंगल दोष हो उसे भौम प्रदोष का व्रत जरूर रखना चाहिए

सनातन धर्म में हम महीने की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष व्रत रखने की परंपरा है। यदि प्रदोष व्रत मंगलवार के दिन पड़े तो उसे भौम प्रदोष व्रत कहा जाता है। आज भौम प्रदोष व्रत मनाया जा रहा है। भौम प्रदोष व्रत में शिव के साथ हनुमान जी की भी पूजा की जाती है। मान्यता है कि इस दिन प्रदोष व्रत कथा पढ़ने या सुनने वालों के सारे संकट दूर हो जाते हैं।

भौम प्रदोष व्रत का महत्व: जिस व्यक्ति की कुंडली में मंगल दोष हो उसे भौम प्रदोष का व्रत जरूर रखना चाहिए। मान्यता है कि भौम प्रदोष व्रत के दिन भगवान हनुमान को घी की नी वाली वाला दीपक जलाने से हर तरह के कर्ज से मुक्ति मिलती है। ये व्रत रखने वालों की सारी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस दिन व्रत और पूजा-पाठ करने से सारे कष्ट मिट जाते हैं और शिव-हनुमान की विशेष कृपा होती है।

भौम प्रदोष पर कैसे करें पूजा?

प्रातः काल उठकर पूजा का संकल्प लें। इसके बाद ईशान कोण में शिव की स्थापना करें। शिव को पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य अर्पित करें। कुश के आसन पर बैठकर शिवजी के मंत्रों का जाप करें। इसके बाद अपनी समस्याओं के अंत होने की प्रार्थना करें। निर्धनों को भोजन कराएं। अगर ये पूजा प्रदोष काल में कर लें तो और भी उत्तम होगा।

प्रदोष व्रत कथा: स्कंद पुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक विधवा ब्राह्मणी अपने पुत्र को लेकर भिक्षा लेने जाती थी और संध्या को लौटती थी। एक दिन जब वह भिक्षा लेकर लौट रही थी तो उसे

नदी किनारे एक सुन्दर बालक दिखाई दिया जो विदर्भ देश का राजकुमार धर्मगुप्त था। शत्रुओं ने उसके पिता को मारकर उसका राज्य हड़प लिया था। उसकी माता की मृत्यु भी अकाल हुई थी। ब्राह्मणी ने उस बालक को अपना लिया और उसका पालन-पोषण किया।

कुछ समय पश्चात ब्राह्मणी दोनों बालकों के साथ देवयोग से देव मंदिर गई। वहां उनकी भेंट ऋषि शाण्डिल्य से हुई। ऋषि शाण्डिल्य ने ब्राह्मणी को बताया कि जो बालक उन्हें मिला है वह विदर्भ देश के राजा का पुत्र है जो युद्ध में मारे गए थे और उनकी माता को ग्राह ने अपना भोजन बना लिया था। ऋषि शाण्डिल्य ने ब्राह्मणी को प्रदोष व्रत करने की सलाह दी। ऋषि आज्ञा से दोनों बालकों ने भी प्रदोष व्रत करना शुरू किया।

एक दिन दोनों बालक वन में घूम रहे थे तभी उन्हें कुछ गंधर्व कन्याएं नजर आईं। ब्राह्मण बालक तो घर लौट आया किंतु राजकुमार धर्मगुप्त 'अंशुमती' नाम की गंधर्व कन्या से बात करने लगे। गंधर्व कन्या और राजकुमार एक दूसरे पर मोहित हो गए। कन्या ने विवाह हेतु राजकुमार को अपने पिता से मिलवाने के लिए बुलाया।

दूसरे दिन जब वह पुनः गंधर्व कन्या से मिलने आया तो गंधर्व कन्या के पिता ने बताया कि वह विदर्भ देश का राजकुमार है। भगवान शिव की आज्ञा से गंधर्वराज ने अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार धर्मगुप्त से कराया। इसके बाद राजकुमार धर्मगुप्त ने गंधर्व सेना की सहायता से विदर्भ देश पर पुनः आधिपत्य प्राप्त किया। यह सब ब्राह्मणी और राजकुमार धर्मगुप्त के प्रदोष व्रत करने का फल था।